Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 10, (मार्च, 2025)
पृष्ठ संख्या 17–18

ब्रायर फार्मिंग (लागत कम मुनाफा अधिक)

अजीत सिह[1], अश्वनी कुमार सिंह[1]
एवं यासिर अजीज तंबोली[1]
सहायक प्राध्यापक, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी
जयपुर–302017, भारत।

Email Id: – drajeet.singh@jnujaipur.ac.in

प्रस्तावनाः–

आज के समय में ब्रायलर फार्मिंग के व्यवसाय काफी तेजी से उभर के सामने आया है तथा मांस उत्पादन के क्षेत्र में ब्रायलर फार्मिंग एक सुविकसित व्यवसाय का रूप ले भी चुका है। क्योंकि ब्रायलर फार्मिंग से अधिक मुनाफा तो प्राप्त होता ही है साथ ही कम समय और कम लागत की भी जरूरत होती है।

ब्रायलर फार्मिंग से संबंधित संक्षिप्त जानकारीः–

ब्रायलर फार्मिंग शुरू करने से पहले पालक को निम्न बातों को सुनिश्चित कर लेना चाहिए–

1. ब्रायलर फार्मिंग के लिए समय स्थान का चुनावः–

- जिस स्थान पर ब्रायलर फार्मिंग के लिए शेड का निर्माण करना हो वह स्थान समतल होने के साथ–साथ ऊंचाई पर भी होना चाहिए जिससे बारिश का पानी उस स्थान पर एकत्रित ना हो।
- जिस स्थान पर ब्रायलर फार्मिंग की शुरुवात करनी हो वह स्थान मुख्य सड़क के जितना पास हो उतना ही अच्छा है।
- ब्रायलर फार्मिंग के लिए बिजली तथा पानी की भी व्यवस्था होना जरूरी है।
- ब्रायलर फार्मिंग के लिए फार्म से बाजार के बीच की दूरी भी जितना कम हो उतना ही अच्छा है, जिससे आवश्यकतानुसार चूजा, दाना, दवाइयां तो उपलब्ध हो ही साथ ही तैयार माल को बेचने में भी कोई कठिनाई ना हो।

2. शेड का निर्माणः–

- ब्रायलर फार्मिंग के लिए शेड का निर्माण करते समय कई महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। पहली महत्वपूर्ण बात यह कि शेड निर्माण के समय यह ध्यान रखा जाए की शेड की जाली वाले हिस्से की दिशा उत्तर और दक्षिण की तरफ हो अर्थात शेड का निर्माण पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए।
- शेड की चौड़ाई 26–30 फीट तथा लंबाई जरूरत के अनुसार कम या ज्यादा कर सकते हैं।
- पानी की बूंदो को जोकि बौछार के रूप में शेड में प्रवेश कर सकती है को रोकने के उद्देश्य से सीमेंट की चादर को 3 फीट तक बाहर लगाना चाहिए।
- शेड का फर्श पक्का होना चाहिए तथा साथ ही शेड के अंदर बिजली, प्रकाश, दाने तथा पानी के बर्तन व पानी की टंकी जोकि फॉर्म की आवश्यकतानुसार संख्या में हो, उपलब्ध होनी चाहिए।

3. दाने व पानी के बर्तनः–

शेड़ के अंदर दाने तथा पानी के बर्तन पर्याप्त संख्या में होने चाहिए जिससे सभी ब्रायलर को आसानी से दान और पानी प्राप्त हो सके। प्रत्येक 100 चूजों के ऊपर 4 पानी और 4 दानों के बर्तन होना आवश्यक है। दाने व पानी के बर्तन मैन्युअल या ऑटोमेटिक दोनों प्रकार के उपयोग कर सकते हैं।

दानाः–

ब्रायलर फार्मिंग में वजन और उम्र के अनुसार 3 प्रकार का दाना निर्धारित किया जाता है–

प्री स्टार्टर– 0 से 10 दिन तक।
स्टार्टर– 11–20 दिन तक।

फिनिशर– 21 दिन से लेकर उसे समय तक जब तक मुर्गा बिक ना जाए।

पानीः–

ब्रायलर का चूजा 2 से 3 लीटर पानी 1 किलोग्राम दाना पर पिता है। गर्मियों के समय पर पानी की खपत और भी बढ़ जाती है।

पानी की खपत को पता करने का एक तरीका यह है कि जितने सप्ताह चूजे की उम्र होगी, उसमें दो का गुणा करने पर जो मात्रा प्राप्त होती है वही पानी की मात्रा प्रति 100 चूजो पर खपत होती है।

जैसे–

चूजे की उम्र प्रथम सप्ताह 1 X 2=2 लीटर पानी/100 चूजा

चूजे की उम्र द्वितीय सप्ताह 2 X 2=4 लीटर पानी/ 100 चूजा

4. जगहः–

- प्रथम सप्ताह में 1 वर्गफीट स्थान में 3 चूजो को रख सकते हैं।
- दूसरे सप्ताह में 1 वर्गफीट स्थान में 2 चूजो को ही रखना चाहिए।
- तीसरे सप्ताह से वजन के अनुसार यदि 1 किलोग्राम वजन वाला चूजा है तो 1 वर्गफीट में केवल एक चूजा।
- 1–1.5 किलोग्राम वाले चूजे के लिए प्रति चूजे 1.25 वर्गफीट स्थान की जरूरत होती है।
- 1.5 किलोग्राम वजन वाले मुर्गे को जब तक उसकी बिक्री न हो जाए प्रत्येक के लिए 1. 5 वर्गफीट स्थान देना चाहिए।

5. लाइटः–

प्रारंभ में प्रथम तथा द्वितीय सप्ताह तक प्रकाश की तीव्रता अधिक रखनी चाहिए तथा उसके बाद प्रकाश की तीव्रता कम करते जाना चाहिए। वैसे तो चूजों को 24 घंटे प्रकाश दे सकते हैं परंतु 23 घंटे ही प्रकाश देना चाहिए और बीच में 1 घंटे का अंतराल कर देना चाहिए, जिससे अंधकार होने पर ही वे डरे नहीं।

6. बुरादाः–

फार्म की फर्श पर धान या मूंगफली का छिलका या लकड़ी का बुरादा 3 से 4 इंच की मोटाई में बिछा देते हैं।

7. ब्रूडिंगः–

ब्रूडिंग से मतलब चूजों को उचित तापमान प्रदान करने से है जैसा की मुर्गी अंडे देते समय देती है ब्रूडिंग कई प्रकार से की जा सकती है–

- अंगीठी या सिगड़ी की मदद से
- गैस ब्रूडर द्वारा
- बिजली के बल्ब या हैलोजन द्वारा

ब्रायलर चूजो को पालने से संबंधी जानकारीः

- चूजे लाने से एक हफ्ते पहले ही फार्म तथा शेड की साफ–सफाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद धुलाई करके चुने से फर्श को पुताई कर देते हैं।
- चूजे लाने से 4 से 5 दिन पहले ही खाली शेड के अंदर और बाहर तीन प्रतिशत फार्मलिन का छिड़काव कर देते हैं।
- चूजे आने से 2 दिन पहले फर्श पर लकड़ी के बुरादे या धान के छिलके की तीन से चार इंच मोटी परत बिछा देते हैं।
- एक दिन पहले बुरादे के ऊपर अखबार की दो परत बिछा देते हैं।
- चूजो के आने से पहले शेड का तापमान चूजो के अनुकूल बना लेना चाहिए इसके लिए एक दिन पहले ही शेडके दोनों तरफ के पर्दों को गिराकर शेड को ढक देते हैं तथा ब्रूडरध्बल्ब को जला देते हैं।
- चूजे आने के दो–तीन घंटे पहले ही बर्तनों में पानी भर लेते हैं।
- चूजों के आने के बाद उनको बॉक्स से बाहर निकाल लेते हैं तथा पोटेशियम क्लोराइड तथा
- इलेक्ट्रॉल पाउडर मिला हुआ पानी पिलाकर ही शेड के अंदर छोड़ते हैं। इसके बाद पेपर के ऊपर दलिया (मक्के का) डालें तथा साथ ही बर्तनों में भी दाने को भरकर लगभग 7–8 घंटे तक केवल मक्के का दलिया ही दें।
- जो चूजे काफी कमजोर और छोटे होते हैं उनको अन्य चूजों से दूर रखते हैं तथा उनके लिए अलग से खाने–पीने की व्यवस्था करें।
- सप्ताह में दो बार बुरादे की गुड़ाई करें जिससे बुरादा सुखा बना रहे तथा एक किलोग्राम चूना 20 वर्ग फीट के हिसाब से मिला देना चाहिए, जिससे शेड के अंदर अमोनिया का निर्माण न होने पावे।